

बिहार विधान सभा वादवृत्त ।

बुधवार, तिथि २८ मार्च, १९५१ ।

भारत के संविधान के उपबन्ध के अनुसार एकत्र विधान सभा का कार्य-विवरण ।
सभा का अधिवेशन पटने के सभा सदन में बुधवार, तिथि २८ मार्च, १९५१ को
पूर्वाह्न ११ बजे माननीय अध्यक्ष श्री विन्ध्येश्वरी प्रसाद वर्मा के सभापतित्व में हुआ ।

अल्प-सूचना प्रश्नोत्तर ।

Short Notice Questions and Answers.

RISE IN THE PRICES OF RICE IN PATNA RATION SHOPS.

48. Shri NAND KISHORE NARAYAN LAL : Will the Hon'ble the Minister in charge of the Supply and Price Control Department be pleased to state—

(a) whether it is a fact that the prices of rice in the ration shops of Patna have been raised from Rs. 22-12-0 to about Rs. 30 a maund ; if so, the reason thereof ;

(b) if the answer to clause (a) be in the negative, the prices of all the different commodities supplied to card-holders of Patna ;

(c) whether it is a fact that a very large number of Government servants of the Secretariat and attached offices who are low paid are facing hunger and starvation these days ;

(d) whether it is a fact that such Government servants are selling their wife's ornaments and other belongings to give at least one meal a day to their family and children ;

(e) whether Government have considered the baneful effect of increase in the prices of rations on the already famished poor Government servants without any corresponding increase in their salary ?

The Hon'ble Dr. ANUGRAH NARAYAN SINHA : (a) It is not a fact that the retail price of the same variety of rice has been raised from Rs. 22-12-0 per maund to Rs. 30 per maund in the ration shops. Certain variety of Punjab rice costing this Government about Rs. 22 per maund had been sold at the wholesale rate of Rs. 22 per maund from Government godown and retail rate of Rs. 22-12-0 per maund from ration shops at Patna. It is also a fact that certain variety of overseas fine rice costing this Government Rs. 28-2-0 per maund is being sold at the wholesale rate of Rs. 28-2-0 per maund from Government godown at Patna and retail rate of Rs. 29-1-0 per maund plus sales tax from the Patna ration shops. d

(ग) क्या सरकार उत्तर भागलपुर एवं सहरसा सब-जिले की खाल-स्थिति की ध्यान में रखते हुए इस तरह का कोई इन्तजाम करना चाहती है जिससे उन क्षेत्रों को अन्न ठीक समय पर मिल सके ?

माननीय डॉ० अनुग्रह नारायण सिंह—(क) सोनबरसा में ८, किशुनगंज में १५, और आलमनगर में ११ फेयर प्राइस शीप्स हैं और उन्हें क्रमशः ५०, १०० और ६० मन अन्न प्रति सप्ताह दिया जाता है ।

(ख) यह बात सही नहीं है, गल्ले का स्टोक रहने पर इन दुकानों को अन्न बराबर दिया जाता है ।

(ग) यह प्रश्न नहीं उठता है ।

जोनल सेवकों के बजट में रूपया ।

B*७२२ । श्री भागवत प्रसाद—क्या माननीय मंत्री, हरिजन कल्याण विभाग, यह बताने की कृपा करेंगे कि—

(क) क्या गत वर्ष के बजट में हरिजन जोनल क्षेत्र के लिये १,१५,००० रुपये रखे गये थे ;

(ख) इतने रुपये में से आज तक कितने रुपये खर्च हुए और ३१ मार्च, १९५१ तक कितना खर्च होने की संभावना है ;

(ग) क्या गत वर्ष के बजट में हरिजनों के लिए १०० प्राइमरी स्कूल के लिये ३६,००० रुपये रखे गये थे ;

(घ) इन रूपयों में से आज तक कितने खर्च हुए, और ३१ मार्च, १९५१ तक कितना खर्च होने की संभावना है ?

माननीय श्री जगलाल चौधरी—(क) उत्तर स्वीकारात्मक है ।

(ख) पूरे आंकड़े सरकार के पास अभी तक नहीं पहुँच सके हैं । जो आंकड़े उपस्थित हैं उनके अनुसार ६,५७७ रुपया खर्च हुआ है और ३,०२१ रुपया और खर्च होने की संभावना है ।

(ग) उत्तर स्वीकारात्मक है ।

(घ) जो आंकड़े उपस्थित हैं उनके अनुसार १४,६३० रुपया खर्च हुआ है, ६,०६० रुपया और खर्च होने की संभावना है ।

श्री अहादीर प्रसाद—क्या सरकार को मालूम है कि गया जिले के बहुत से ऐसे स्कूलों को रुपये दिये गये हैं जहाँ स्कूल नहीं हैं, क्या सरकार इसकी जाँच करायी ?

माननीय अध्यक्ष—याप नाम-व्यतसादये । प्रश्न अनिश्चित है, निश्चित प्रश्न दीर्घा से जवाब मिल सकता है ।

B.—Postponed from the 21st March, 1951.

NOTE.—Starred question nos. 724 and 726 lapsed.

श्री भागवत प्रसाद—मेरा प्रश्न (ग) से है। ३६ हजार रुपये में से १४ हजार रुपये के बच जाने का कारण क्या है, ये रुपये खर्च क्यों नहीं हुए ?

माननीय श्री जगलाल चौधरी—स्वीकृति देर से मिली थी, इसलिये रुपये खर्च नहीं हो सके ।

श्री भागवत प्रसाद—क्या इन स्कूलों की स्वीकृति की खबर और ग्रांट देने की खबर सबों को मिल चुकी है ?

माननीय श्री जगलाल चौधरी—जी हां ।

श्री भावत प्रसाद—जब सभी स्कूलों को ग्रांट देने की स्वीकृति मिल चुकी है और उनको खबर दी जा चुकी है तो रुपया बचने का कारण क्या है ?

माननीय श्री जगलाल चौधरी—स्वीकृति देर से मिली इसलिये रुपये बच गये ।

श्री भागवत प्रसाद—स्कूल तो बारहों महीने चलते रहते हैं तो मैं जानना चाहता हूँ कि क्या टीचर्स का वेतन नहीं दिया गया कि रुपया बच गया ?

माननीय श्री जगलाल चौधरी—स्वीकृति दिसम्बर में मिली इसलिये रुपये बच गये ।

श्री भागवत प्रसाद—किस स्कूल की कब स्वीकृति दी गई ?

माननीय अध्यक्ष—१०० स्कूल हैं । इनके लिये एक निश्चित प्रश्न होना चाहिये ।

श्री भागवत प्रसाद—हुजूर, यह मोटा-मोटी बताया जा सकता है कि कब स्वीकृति दी गई ?

माननीय अध्यक्ष—प्रश्न तो अनिश्चित है । खैर, माननीय मंत्री जवाब दे सकें तो हैं ।

माननीय श्री जगलाल चौधरी—इसका जवाब मेरे पास नहीं है ।

श्री अर्जुन प्रसाद मिश्र—मैं जानना चाहता हूँ कि १,१५,००० रुपये जो हरिजन जोनल सेवकों के लिये रखे गये हैं वे खर्च क्यों नहीं हुए ?

माननीय श्री जगलाल चौधरी—बहाली दिसम्बर के फोर्टनाइट में हुई इसलिये रुपये बच गये ।

RAIDS AND SEARCHES.

*774. **Shri JAGANNATH PRASAD SINGH** : Will the Hon'ble the Minister in charge of the Supply and Price Control Department be pleased to state—

(a) whether the attention of Government has been drawn to the editorial of a local English daily dated February 27, 1951, under the heading—"Story of Raids and Searches" ;

(b) if the answer to clause (a) be in the affirmative, how far the specific charges levelled in the brochure of the Federation of Indian Chambers of Commerce have been found to be correct ;